ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-10 अगस्त-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

परमात्म प्रकाश से प्रकाशित दादी प्रकाशमणि

कहते हैं जहां प्रकृति सुंदर होती है वहां बरबस सैलानी आकर्षित हो जाते, उसे निहारते, उसको अपने आँखों रूपी कैमरे में पूरी तरह से कैद करते और पुनः जाकर उसका चित्र निकाल, उसकी तस्वीर को कमरे में सजा देते। फिर भी मन नहीं मानता और बार-बार उसे देखते। ऐसे ही प्रकृति की अनुपम छटा से सुशोभित, जिसे हूरों ने स्वयं सजाया हो, चाँद का नूर जिस पर बरसता हो, जिसे देखकर हवा भी उस ओर आने को आतुर होती और उस सुगंध को लेकर पूरे विश्व में फैलाने हेतु आग्रह करती, ऐसे परमात्म प्रकाश से प्रकाशित दादी प्रकाशमणि की ऐसी अविस्मरणीय छवि को कौन सी ऐसी दीद है जो दीदार न करना चाहेगी! ऐसी प्रज्ञा की मिसाल दादी माँ को हम सभी ब्रह्मावत्सों का सहृदय और सप्रेम सलाम। '

ऐसी मान्यता है कि जिस घड़ी रब किसी इंसान को गढ़ता है उस समय अपनी सारी खूबी उसके अंदर वो जैसा है वैसी ही डाल देता है, और फिर उसे कई बार निहारता है, फिर नीचे भेजता है ताकि जब भी कोई इंसान इसको देखे तो उसे उसके खुदा या रब की याद आ जाए। यह मान्यता सरासर गलत है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है, बल्कि वो तो खूबियों का गुलदस्ता है। लेकिन खूबी देखने के नैन भी तो चाहिए! ऐसी खूबियों का गुलदस्ता हमारी दादी प्रकाशमणि थीं जिन्हें हम जिस रूप से भी देखें, हर तरफ से कुछ न कुछ गुण रूपी पुष्प हम उठा सकते हैं। उनका पूरा चरित्र एक जीवन दर्शन है, अर्थात् उनकी नज़र से जो कुछ भी कोई देखना चाहे, वो देख सकता है। कहते हैं कि दादी जी एक आईना थी हमारे लिए जिसमें सभी अपनी तस्वीर जाकर देखते और अपने अनुभव में कहते कि हमारी दादी के अंदर ये विशेषता है और हम इस विशेषता को लेकर अब आगे बढ़ेंगे।

ब्रह्माबाबा का अक्स थीं हमारी दादी

18 जनवरी 1969, जब ब्रह्माबाबा ने शरीर छोड़ा, उस समय अपना सारा यज्ञ-कारोबार व उसकी सम्पूर्ण कार्यशैली को दादी जी के हाथ में सौंपा। दादी जी का अनुभव है कि उसकी पूर्व तैयारी ब्रह्माबाबा बहुत पहले से कर रहे थे। दादी जी के गुण को देखकर बाबा ने उन्हें सब कुछ विल किया। मात-पिता की पालना में पले किसी बच्चे के ऊपर एकाएक कोई ज़िम्मेवारी आ जाए जो उसके माता-पिता निभाते हों तो कैसा अनुभव होगा! लेकिन कहा जाता है कि दादी प्रकाशमणि थोड़ी भी विचलित नहीं हुईं, उन्होंने इस कार्य को बखूबी निभाया। उन्होंने सभी ब्रह्मावत्सों को वही पालना दी जो ब्रह्माबाबा देते थे। तभी तो आज मधुबन में किसी से भी बात करो, सभी का एक ही स्वर होता है कि वो हमारी दादी माँ थीं।

एक प्रकाश पुँज है, एक प्रकाश की मणि।
दोनों मिलके आज भी दे रहे हैं रोशनी।

स्वयं से स्वयं को चेक करते थे दादी

एक बार दादी से सबने उनके पुरुषार्थ के बारे में पूछा कि दादी आप अपना पुरुषार्थ कैसे करते हैं? दादी ने बताया कि मैं आत्मा हूँ, हीरे समान देखती हूँ और उसको अपनी हथेली पर रखती हूँ तथा चेक करती हूँ कि हीरे की किस साइड से प्रकाश ठीक से नहीं आ रहा है, अर्थात् कौन से गुण व शक्ति की कमी है, उस ओर मैं अपने आप को घिसती हूँ, सफाई करती हूँ, तराशती हूँ। इससे वहां का धूमिल प्रकाश हटकर तीव्र प्रकाश आना शुरु हो जाता है। मेरे से किसी को कष्ट व दुःख तो नहीं हुआ ऐसा महसूस कर परिवर्तन करती हूँ। इस तरह का था दादी का पुरुषार्थ।

सभी को एक सूत्र में बांध, साथ मिलकर चलने वाली दादी एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व थीं।

कहते हैं दादी जी की उल्हना, आदेश और अनुदेश में लोगों को मिठास का अनुभव होता रहा। शायद इन्हीं सारी बातों को लेकर प्रकाश पुँज शिव बाबा ने अपने रथ द्वारा यही प्रेरणा दी कि आप परमात्म कार्य की उन सभी ज़िम्मेवारियों को निभाओ जो बाबा उनके रथ द्वारा किया करते थे। ज्ञान में विशेष रुचि रखने वाली दादी जी ने इस विशेषता को समाज के सभी वर्गों के लिए अपनाया।

शिव बाबा की मंसा को साकार किया दादी ने

बाबा ने ज्ञान कलश माताओं के सिर पर रखा, उसी में दादी जी भी थीं जिन्होंने अपने प्रकाश से सभी के मन रूपी क्यारी को सींचा। दैदीप्यमान प्रकाश शिव बाबा ने अपने प्रकाश की किरण इस मणि को प्रदान किया और उस मणि ने अपने प्रकाश से अन्य मणियों को रोशनी दी, ऐसे दी कि आज वो मणियां पूरे विश्व में अपना प्रकाश फैला रही हैं। कहा जाता है कि संसार में कार्य तो सभी करते हैं लेकिन कुछ लोग सभी के लिए एक मिसाल छोड़ जाते हैं,वही मिसाल हैं दादी प्रकाशमणि।

आत्मिक ऊर्जा का स्वरूप थी दादी

वैसे तो संसार रूपी बेहद नाटक में हज़ारों मनुष्यात्माएं रोल अदा कर फिर चली जाती हैं। लेकिन कुछेक आत्माओं का पार्ट विशेष रहता है जो आत्मीय गुणों को साकार कर दूसरों की जीवन यात्रा में सहयोग प्रदान करते हैं। ऐसे विशाल हृदयी दादी प्रकाशमणि जी की पुण्य तिथि पर मैंने यही देखा-समझा-जाना कि दादी के सानिध्य में आते उनकी निश्छल दृष्टि, निर्मल भावनाएं व खुशनुमा सूरत ने हमारे हृदय को स्पर्श किया। यह अनुभव विश्व की लाखों आत्माओं का है चाहे वो उनसे एक बार भी मिली होंगी। दादी जी की निर्णय शक्ति ज़बरदस्त रही। उनके व्यक्तित्व में यह विशेष बात थी कि जिस भी सेवा कार्य में उन्होंने उम्मीद रखी उसका प्रारूप उसी तरह बन गया। बात 90 के दशक की है, जब ज्ञानसरोवर के निर्माण का कार्य आरंभ करना था। तब दादीजी ने मधुबन के भाइयों के मध्य यह बात रखी कि इस कार्य को कौन सम्भालेगा। यज्ञ इतिहास में यह पहला ऐसा विशाल प्रोजेक्ट था। इस प्रकार के कन्स्ट्रक्शन का इससे पूर्व किसी को अनुभव नहीं था। बस परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को विशालता प्रदान करने के लिए प्रथम नींव डाली जा रही थी। ऐसे में दादी जी ने मुझे इस कार्य को क्रियान्वित करने का सुअवसर प्रदान किया।

- ब्र. कु. गंगाधर

संस्थान के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर जी ने कहा कि आपको ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य को देखना है। मुझे इस प्रकार के कार्य के बारे में कुछ पता नहीं था, कैसे होगा, बस ईश्वरीय कार्य की उस बेहद योजना में हमारी विशेषताओं की अंगुली लगाने का भाग्य बाबा से प्राप्त हुआ। दादीजी की निर्णय शक्ति व विश्वास के साथ उम्मीद रखने का यह मेरे जीवन का अनुभव था। परमात्मा के विशाल परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ाने में दादीजी का पार्ट कितना अहम था यह शब्दों में बताना कठिन है। लेकिन दादीजी विश्व में ईश्वरीय पताका फहराने के निमित्त रहीं।

श्रेष्ठ लीडर वह जो स्वयं लाइट रहे

दादीजी हर एक की विशेषता को एक सूत्र में पिरोकर यज्ञ सेवा के कार्य में लगाने में माहिर थीं। किसी की भी कमी को खत्म करना और उस आत्मा में खुशी का बल भरकर सेवा में लगाना, ऐसे दादी जैसा कुशल प्रशासक मैंने कोई नहीं देखा। दादी जी ने जबसे परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने का जिम्मा लिया उनके जीवन में एक बात स्पष्ट रही कि दूसरे आगे बढ़ें, बस यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही या ताकत रही इस विशाल संगठन को बनाने में। कार्य कितना भी बड़ा हो उसे पर्वत से राई और राई से रूई बना देना तथा निश्चिंत रहना उनकी था। सेवा साथियों के उमंग-उत्साह को बनाये रखना यह उनकी खूबी थी। हम पढ़ा करते थे, श्रेष्ठ लीडर वह जो स्वयं लाइट रहे और साथियों को भी लाइट रखे। यह क्वालिटी दादीजी के व्यक्तित्व में नज़र आती थी।

संकल्प शक्ति में सदा दृढ़ता

एक बार जब ज्ञानसरोवर के निर्माण कार्य में किसी कारणवश रुकावट आ गई। दादी जी ने कहा कि योग करो, सब रुकावटें खत्म हो जायेंगी। सचमुच सबने योग किया और रुकावटें ऐसे खत्म हो गईं जैसे कि थीं ही नहीं। दादीजी की ईश्वर के प्रति ज़बरदस्त आस्था एवं विश्वास उनकी शख़्सियत को हर क्षेत्र में निखारता नज़र आता रहा। ईश्वरीय कार्य में कई विघ्न-रुकावटें व समस्याएं आईं परन्तु एक परमात्मा में आस्था रूपी शस्त्र के सामने सब नाकामयाब रहे। दादीजी की संकल्प शक्ति में सदा दृढ़ता झलकते देखी। मिलिनियम मिनट फॉर पीस का प्रोजेक्ट, ग्लोबल पीस जैसे विश्व व्यापी सेवा कार्यों को इतना सुचारू रूप से सफलता की मंज़िल तक पहुंचाना, यह दादी जी की ही हिम्मत व विश्वास का प्रतिफल था। इन सेवाओं से ही विश्व में ईश्वरीय कार्य का पर्दा खुला। दादीजी को `विश्व शांतिदूत' के सम्मान से नवाज़ा गया। ऐसी परमात्म पुँज दादी को उनकी आठवीं स्मृति दिवस शत् शत् नमन।

जहाँ पड़े कदम वहाँ रचा इतिहास

दादी प्रकाशमणि को मैं पचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पद-भार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बनाए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रहीं।

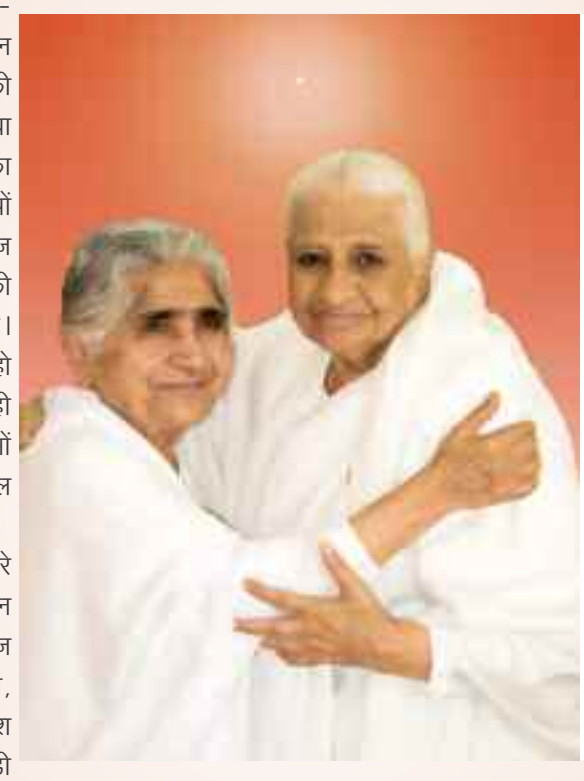

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे ये भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नैचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था। यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परन्तु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीच अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई। देखते ही देखते आज हमारे सामने गलोब पर बाबा का परचम लहराया।

साकार बाबा की पालना को आगे बढ़ाया दादी ने

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही हैं। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर के नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत इस प्रकार, सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए। बाबा की ये बात जो दादी ने अपने जीवन में धारण की, उसे हमें भी अपने जीवन में धारण करने का पूरा पुरुषार्थ करना है।

परमात्म शक्ति को विश्व व्यापी बनाया

हमेशा कहती थीं, सिम्पल रहो, सैम्पल बनो

दादी जी का बाबा की मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) से बहुत प्यार व रिगार्ड था। वे सुबह क्लास में जाने से पहले मुरली को अच्छी तरह पढ़ती थीं। फिर शाम को चाय पीने के बाद मुरली पढ़ती थीं। रात्रि को, कितनी भी देर से वे कमरे में आएं पर मुरली पढ़े बिना सोती नहीं थीं। बाबा की मुरली से इतना जिगरी प्रेम था। कभी-कभी हम उनको कहते थे, दादी आप मन-मन में पढ़ रही हैं, हमें भी सुनाइए, हम भी सुनेंगे। तब दादी जी बहुत प्यार से पढ़कर सुनाती थीं, चाहे रात्रि के ग्यारह, साढ़े ग्यारह क्यों न बज जाएं।

दादी जी के अंदर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। कमरे में दादी के दोनों तरफ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रहो, सैम्पल बनो। मर्यादा पुरुषोत्तम बाबा की बच्ची होने के नाते दादी स्वयं मर्यादा में रहती थीं और सबको यही सिखाती थीं। वे कहती थीं, न बहुत ऊपर, न बहुत नीचे, साधारण रहो। वे कहती थी की यह समय बहुत ही मुल्यवान है हमें उन्हें सफल करना चाहिए।

-ब्र.कु. मोहिनी,अध्यक्षा,ग्राम विकास प्रभाग।

सदा तत्पर थी दादी

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी को सारे ब्राह्मण परिवार से बेहद प्यार था। जो सामने आता था, उसका मुस्कराकर स्वागत करती थीं। वे निद्राजीत और अथक सेवाधारी थीं। जब कभी हम कहते थे, दादी! अमुक व्यक्ति आपसे मिलने आया है तो बिस्तर से उठकर भी मिलने को तैयार रहती थीं। वे तपस्वीमूर्त थीं। रात्रि को दो बजे उठकर तपस्या करती थीं। अमृतवेले का योग नियमित करती थीं। उस समय उन्हें बाबा से बहुत प्रेरणाएं मिलती थीं जिन्हें वे सुनाती भी थीं। ओम शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। - ब्र.कु. मुन्नी, कार्यक्रम निदेशिका।

हिम्मत से जीना सिखाया दादी ने

मेरा अलौकिक जन्म नौ वर्ष की आयु में हुआ, परन्तु इस जन्म को श्रेष्ठता प्रदान करने वाली आदरणीय दादी जी को मैं अपनी विशेष टीचर के रूप में देखती थी। उन्होंने मुझे हर प्रकार की ट्रेनिंग दी। एक अच्छी विद्यार्थी, एक अच्छी शिक्षिका, एक अच्छी प्रशासिका, एक अच्छी ट्रेनर के लक्षण क्या हैं, यह सब दादीजी में दिखाई देते थे। मैं उन्हें ऑब्ज़र्व किया करती थी। दादी जी का भी मेरे साथ बहुत प्यार था। दादीजी की एक विशेषता थी कि वे कभी भी किसी बात को असम्भव नहीं समझती थीं और ना ही दूसरों को समझने देती थीं। एक बार कलकत्ता में पहला-पहला बहुत बड़ा मेला था, दादी जी वहां मेले की तैयारी के लिए गई थीं। मेरा सौभाग्य था कि मैं भी दादी जी के साथ थी। यह बात सन् 1974 की है। मेले में प्रेस कॉन्फ्रेन्स रखी गई। उसका हैण्ड आउट बनाना था। दादीजी ने मुझे कहा कि आशा तुम लिखो। मैंने कहा, दादीजी मैंने आज दिन तक नहीं लिखा है। दादीजी सिखाने की भावना से गंभीर होकर बोलीं- कोई तो दिन होगा जो तुम पहली बार लिखोगी, तो समझो आज ही पहला दिन है और मैंने वो हैण्ड आउट हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार किया और दूसरे दिन वह प्रकाशित भी हुआ, जिससे मुझे प्रसन्नता तो मिली पर साथ-साथ दादी जी ने वो बीज बो दिया कि हिम्मत रखोगे तो बाबा मदद करेगा।

-ब्र.कु.आशा,निदेशिका ओ.आर.सी. गुड़गांव।

उनके हर कर्म योगयुक्त था

दादीजी की सबसे बड़ी विशेषता थी उनमें मैं-पन का सम्पूर्ण अभाव। हमने कभी भी उन्हें मैं शब्द उपयोग करते नहीं देखा। दादीजी के मुख्य प्रशासिका बनने से पहले भी मुम्बई में मुझे दादीजी के साथ रहने का अवसर मिला। उन्हें अपना विचार प्रकट करना भी होता था तो वे कहती थीं कि दादी का यह विचार है, दादी ऐसा करना चाहती है। हम सभी सामान्य रूप से यह कहते हैं कि मेरा यह विचार, मैं यह करना चाहती/चाहता हूँ, परन्तु दादीजी ने कभी मैं या मेरा शब्द उपयोग नहीं किया। खुद का पार्ट भी वे साक्षी होकर बजाती थीं। उन्हें भले बैठकर अधिक समय योग करने का समय नहीं मिलता था लेकिन उनका हर कर्म ही योगयुक्त था। कर्म में ही बाबा की याद समाई होने के कारण उनके हर कर्म महान व श्रेष्ठ थे। उनमें कर्तापन का भान बिल्कुल नहीं था। वे सदा स्वयं को निमित्त व बाबा को करनकरावनहार समझते थे। इस धारणा के कारण वे हर कर्म करते सहज न्यारे रहते थे। वे सदा सभी को साथ लेकर चलती थीं इसलिए सभी उनसे प्रसन्न व संतुष्ट रहते थे। वे हम सभी बहनों को अपनी सखी की तरह प्यार व सम्मान देती थीं। दादी सदा निष्पक्ष रहती थीं। वे कभी किसी पक्ष के प्रभाव में आकर निर्णय नहीं लेती थीं। बाबा की याद में रहने के कारण उनकी निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। उनके अथॉरिटी भरे बोल ऐसे होते थे जो हर आत्मा दिल से स्वीकार करती थी कि दादीजी ने कहा माना बाबा ने कहा और मुझे करना ही है। वे क्षमाशील थीं। दादीजी में लव एवं लॉ का सुंदर संतुलन था। दादीजी ने कभी स्वयं को प्रमुख न मानकर निमित्त समझ सेवा की ज़िम्मेवारी सम्भाली। दादी का मन बहुत ही निर्मल था, किसी का अवगुण उनके चित्त पर ठहरता नहीं था। दादीजी ने अपने ज्ञान व योग की ऊँची धारणाओं से सभी यज्ञवत्सों को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा। यह ईश्वरीय परिवार है। यह बाबा के कार्य को प्रत्यक्ष करने वाले विश्वसेवाधारी बच्चें है।

-ब्र.कु. संतोष,महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश की निदेशिका।

पवित्रता की मूरत थी दादी

शुरु से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादीजी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबंध करना, प्रबंध को देखना, यह सब दादी खुद करती थीं जैसे कि साकार बाबा स्वयं करते थे।

शुरु से ही हम देखते आये हैं कि दादीजी की प्योरिटी महान थी। हर प्रकार की प्योरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव आदि में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहां प्योरिटी होती है, वहां हर प्रकार की सिद्धि ऑटोमेटिक होती है। प्योरिटी हर गुण का बीज है। जहां प्योरिटी होती है वहां सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियां अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलाएं थीं वो भी आ गईं थीं। हम उन क्वालिटीज़ को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।

-दादी रतनमोहिनी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़।

परख शक्ति की धनी दादी प्रकाशमणि

साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद मुख्य प्रशासिका दादी जी से अधिक सम्पर्क रहा। एक बार की बात है, हम साठ टीचर्स बहनों का दादी, दीदी और मनोहर दादी के साथ हिस्ट्री हॉल में भोजन का प्रोग्राम था। रमणीकता की मूर्ति मनोहर दादीजी ने भोजन के पश्चात् दादी जी से कहा, दादी! आप इन बहनों की विशेषताओं को जानती हैं तो बताइये। दादी जी ने बिना समय लगाये लाइन से जैसे हम बैठे थे, वैसे ही बारी-बारी से एक-एक बहन की विशेषताएं सुनाईं। सोचने की बात है कि वैसे तो किसी एक की विशेषता सुनाने में सोचना पड़ता है, लेकिन दादी जी ने एकदम से तुरंत सभी की विशेषताएं सुना दीं। सत्यता की स्वर्ण आभा, परख शक्ति की धनी, दिलों की समीपता को गहराई से जानने वाली हमारी प्यारी दादी थीं। -ब्र.कु. पुष्पारानी,नागपुर विदर्भ क्षेत्र की निदेशिका।

निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान मिला

एक बार मैं दादीजी के सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादीजी ने कहा, देखो रानी! बाबा सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी जी ने कहा, सारे दिन में कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी जी के अनुभवों की गहराई से निकले बोल मेरे हृदय में समा गये और मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई।

एक बार मैंने दादी से कहा कि मैं जहां सेवा पर हूँ वहां पर मैं जाना नहीं चाहती। दो दिन के बाद दादी ने बुलाया और पूछा, कितनी बहनें सेवा पर वहां समर्पित हैं? मैंने बताया लगभग बारह बहनें हैं। दादी जी ने कहा कि अपने कारण नहीं लेकिन उन बहनों के कारण आप वहां जाओ और निश्चिंत होकर सर्विस करो। दादी की इस आज्ञा का पालन कर मैं से-वास्थान पर पहुंच गई और सारे विघ्न दादी ने समाप्त कर दिए। आज तक निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान जो मिला वह सदा साथ दे रहा है। दादी जी मदद करती रही हैं और कर रही हैं। -ब्र.कु. रानी,मुज़फ्फरपुर बिहार।

दादी की दरियादिली

ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

मैंने लगभग 40 वर्ष तक उन्हें समीपता से देखा, उनकी महानताओं को निहारा, उनके प्रेम व सम्मान का रसपान किया, उनकी शीतल छाया में जीवन को शीलत किया, उनकी मार्ग प्रदर्शना में अपने यज्ञ सेवा के कार्यों को सम्पन्न किया। वे महानता की चेतन प्रतिमूर्ति थीं, उनका जीवन ही एक महान तीर्थ था, वे यहीं पर विश्व महाराजन समान एक महान राजऋषि थीं। पवित्रता की इस महान देवी को जैसा मैंने देखा, उसकी कुछ झलकियां यहां प्रस्तुत हैं...

गुजरात के तत्कालिन मुख्यमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी के साथ दादी प्रकाशमणि।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ बातचीत करते हुए दादी प्रकाशमणि।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के साथ दादी प्रकाशमणि व अन्य।

स्वामी बालगंगाधर,आदि चुनचुनगिरी मठ को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए दादी प्रकाशमणि।

सवेरे मुरली क्लास चल रही है, 7 बजे हैं। सारे भारत से वरिष्ठ भाई योग-भट्ठी करने आये हैं... किसी प्रसंग वश दादी ने कहा, सभी गर्म-गर्म गुलाब जामुन खायेंगे...? उत्तर तो था ही उत्साहवर्धक...बस वहीं मुझे कहा, सूर्य उठो और सबके लिए गर्म-गर्म गुलाब जामुन बनाओ। उनका आदेश तो ईश्वरीय आदेश था और 7:30 बजे गर्म-गर्म गुलाब जामुन क्लास में वितरित होने लगे। दादी के इस पुनीत प्यार व अपनेपन को देखकर सभी गद्गद् हो गये।

यह सद्गुरु का दर है

वे कहा करती थीं, जिस घर में मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। भगवान के घर सबसे ज़्यादा मेहमान आते हैं, यह सद्गुरु का दर है। वे मेहमान भी भगवान के बच्चे हैं, पवित्र ब्राह्मण आत्माएं हैं व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरी करनी है। वे चाहती भी यही थीं कि हमारे पास सदा ही बहुत मेहमान रहें, घर खाली न रहे। मेहमान ही हमारे घर का श्रृंगार हैं। वे सबसे मिलतीं बुलातीं, सबको पारिवारिक व अपनेपन की भासना देती थीं और सबमें शक्ति भी भरती थीं।

दादी की दरियादिली

वे दरियादिल थीं। जब यज्ञ छोटा था तो भी वे उदारता का परिचय देती थीं और जब यज्ञ विशाल हुआ तो उनका दिल भी और ही विशाल हो गया। वे यज्ञ वत्सों का ध्यान रखतीं, उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेतीं, उन्हें क्या चाहिए - यह पूछतीं और वर्ष में कई बार सबको ताकतवर चीज़ें खिलाने के साथ-साथ विभिन्न अवसरों पर सबको सौगातें भी वितरित करती थीं ताकि किसी की भी बुद्धि दुनिया में न जाए।

एक बार किसी ने उनसे बुरा व्यवहार किया। सभी देखने वालों के तेवर चढ़ गये। दादी ने सभी को शान्त किया। बाद में एक बुज़ुर्ग व्यक्ति दादी से मिले और कहा, दादी जी! हमसे उसका व्यवहार सहन नहीं होता, इस नालायक को यज्ञ से निकाल दिया जाए। दादी जी मुस्कराई और कहा, नहीं, दादी को तो कुछ हुआ ही नहीं। सब बाबा के बच्चे हैं... उस बुज़ुर्ग के नयन भर आये दादी की सहनशीलता को देखकर।

तत्कालिन राष्ट्रपति महामहिम डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

उनकी उपस्थिति मात्र से हल्कापन

वे सच्ची कर्मयोगी थीं। सारा दिन कर्म करके भी वे रात को ऐसी हल्की दिखती थीं कि मानो उन्होंने कुछ किया ही न हो। उनके व्यक्तित्व की एक बात विशेष नोट करने वाली है कि वे जहां भी जाती थीं, उनसे डरकर लोग छिप नहीं जाते थे, बल्कि उनके चारो ओर इर्द-गिर्द खुशी से इकट्ठे हो जाते थे। उनकी उपस्थिति सभी को हल्का करने वाली व सभी की समस्याओं का समाधान करने वाली होती थी।

वे सच्चे अर्थों में त्यागी थीं

उनका त्याग ऐसा था कि वे ध्यान रखती थीं कि मेरे लिए ज़्यादा खर्च न हो। वे ध्यान रखती थीं कि मुझे ही सब फॉलो करेंगे। अंत तक भी उन्हें बहुत ध्यान रहा कि उनकी कार डीज़ल की ही हो। त्याग व सादगी से भरा उनका जीवन सब पर अमिट छाप छोड़ता था। हम जानते हैं कि बिना त्याग के तपस्या नहीं होती और क्योंकि वे अपनी गहन तपस्या पर सूक्ष्म रूप से ध्यान देती थीं, इसलिए उन्होंने त्याग को अपना तेज बना लिया था।

क्योंकि वे इस ईश्वरीय परिवार की दादी थीं, बड़ी दादी, वे सबके खाने का व सबको बहलाने का भी पूरा ध्यान रखती थीं। सबको पिकनिक पर ले जाना, सबका बाहर भी घूमने का ध्यान रखना, सबको अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाना - यह उनका स्वभाव था। सभी ने उनको उदारचित्त रूप में ही देखा, यद्यपि वे ध्यान रखती थीं कि कुछ भी वेस्ट न हो।

वे पवित्रता की देवी थीं

उनकी पवित्रता की शक्ति उनके चेहरे की निर्मलता से अभिव्यक्त होती थी। एक बार मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन चल रहा था, उसमें अनेक महामण्डलेश्वर आये थे। दादी उनके साथ मेडिटेशन हॉल में जा रही थीं। इसी मध्य एक महामण्डलेश्वर दादी जी का हाथ अपने हाथ में लेकर चलने लगा। वहां पहुंच कर उसने सभा में अपना अनुभव सुनाया कि अभी-अभी दादी के हाथ के स्पर्श से मुझे उनके महान पवित्र होने का विश्वास हो गया है। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संस्था की चीफ इतनी महान पवित्र आत्मा हैं, इससे सिद्ध होता है कि ये संस्था सर्वोच्च शिखर पर पहुंचेगी।

उनके देह में अनेक बीमारियां आईं, परंतु कभी उनके मुख से आह... या हाय... नहीं निकला। वे सहज ही सभी बीमारियों को पार कर लेती थीं। कई बार उनके ऑपरेशन भी हुए, परंतु शीघ्र ही वे पुनः सेवा-क्षेत्र पर उपस्थित हो जाती थीं। अंतिम बीमारियों में भी वे पूर्णरूपेण योग-युक्त व अशरीरीपन की स्थिति में रहीं। उनकी बीमारियां भी दूसरों के लिए सेवा का साधन बन जाती थीं। बीमारियों में कभी भी किसी ने उनको चिड़चिड़ा होते नहीं देखा। वे पेशेन्ट रूप में कभी नहीं रहीं बल्कि सबको पेशेन्स (धैर्य) देने वाली रहीं।

सुमेरू मठ के नरेन्द्र स्वामी शंकराचार्य के साथ दादी प्रकाशमणि व दादी जानकी

वे अति निरहंकारी थीं। सबको दिल से सम्मान देती थीं। वे दूसरों की योग्यताओं को सम्मान देती थीं व उनका सेवाओं में उपयोग करती थीं। स्वयं को नम्रचित्त बनाने में उन्होंने ब्रह्माबाबा को फॉलो किया, उनके चलने से, देखने से व व्यवहार से कहीं भी अहं दृष्टिगोचर नहीं होता था। अनेक बार वे स्वयं हम सबके साथ अहमदाबाद तक बस में यात्रा करके गईं। उन्हें सबके साथ रहना अच्छा लगता था। बहुत दिन पूर्व की बात है, उनका टिकट प्रथम श्रेणी में था, व हम सब द्वितीय श्रेणी में थे, उन्होंने टी.टी. को कहकर हम सबको अपनी केबिन में बुला लिया। ऐसी सिम्पल और हम सब के लिए एक सैम्पल थीं हमारी दादी माँ।

दिल्ली-पांडव भवन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योगानुभूति कार्यक्रम में अपने आशीर्वचन से सभी को लाभान्वित करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. पुष्पा।

रामपुर-मनिहारान-उ.प्र.। जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर पुष्प अर्पित करते हुए क्षेत्राधिकारी प्रेमवीर सिंह राणा, बाबूराम जी व ब्र.कु. संतोष।

चुरू-राज.। अंतर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस पर रेलवे स्टेशन पर लगाई गई प्रदर्शनी में यज्ञकुण्ड में नशे की आहूति देने की जानकारी देते हुए ब्र.कु. सुमन।

फतेहगढ़-उ.प्र.। मातेश्वरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्षा वत्सला अग्रवाल को शॉल पहनाने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन।

देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दायें से पण्डित डॉ. मोहनानन्द मिश्र,पूर्व प्राचार्य,संस्कृत महाविद्यालय, डॉ. दिवाकर कामत, विष्णु भट्टाचार्य, मुख्य प्रबंधक,यूको बैंक व ब्र.कु. रीता।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बालकृष्ण साहू,पूर्व जी.एम.,डी.आई.सी., ब्र.कु. गीता, श्रीमती जयमाला साहू, डॉ. शिल्पा व गीता पाटा,डायरेक्टर,होली डे रिज़ॉर्ट।

दादी का जीवन ही एक आदर्श था

दादीजी विश्व की दादी बन गई थीं। ब्राह्मण परिवार ही नहीं बल्कि अन्य सब भी उन्हें उच्च आदर की नज़र से देखते थे। इस संसार के लोग महान पुरुषों की महिमा करते हैं परन्तु दादीजी की महिमा स्वयं भगवान करते थे। ईश्वरीय सेवा में ही उन्हें सुख भासता था। वे अति सरल, साक्षी व समर्पण भाव में नैचुरल रूप से रहती थीं, यही उनकी प्रसन्नता का राज़ था। जब वे यज्ञ की मुख्य प्रशासिका बनीं तब केवल 150 सेवाकेन्द्र थे और जब उन्होंने इस संसार से विदाई ली तो 8000 सेवाकेन्द्रों का विशाल वटवृक्ष चारो ओर अपनी शीतल छाया प्रदान कर रहा था। दादी ने सेवाओं का विस्तार देखते हुए ओमशान्ति मीडिया न्यूज़ पेपर निकालने का निर्णय लिया, ताकि सभी ईश्वरीय सेवाओं से अवगत हो सकें।

-ब्र.कु. करुणा,सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक,ब्रह्माकुमारीज़

भारत के तत्कालिन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. निर्वैर, दादी हृदयमोहिनी व ब्र.कु. मुन्नी।

भले ही दादी जी अब हमारे बीच साकार रूप में नहीं हैं, लेकिन उनके साथ ईश्वरीय सेवा में बिताये हुए 48 वर्ष मेरे हृदय पटल पर अथवा मन की स्क्रीन पर ऐसे अंकित हैं कि मुझे हर समय अव्यक्त बापदादा और दादी जी दोनों साथ-साथ महसूस होते हैं। चाहे मैं योग अभ्यास में हूँ या ईश्वरीय सेवा में हूँ, दादी के साथ का मेरा अनुभव मुझे यही प्रेरणा देता है कि मैं दादीजी के साथ-साथ कल्प के आदि से अंत तक भाई-बहन के सम्बन्ध से सदा पार्ट बजाता रहूँगा। दादीजी की प्रेरणाएं व शिक्षाएं हम सभी को उनकी साकार अनुभूति कराती रहती हैं।

-ब्र.कु. निर्वैर,महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं की सुरक्षा का पर्व है रक्षाबंधन

सुंदर एवं पवित्र संकल्पों से मन को सींचकर स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं। कहा भी जाता है ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। पवित्र, शुद्ध विचारों से मन को मज़बूत बनाकर आत्मिक भाव रखकर स्वयं की रक्षा संभव हो सकती है। रक्षाबंधन का मार्मिक/तार्किक अर्थ है स्वयं की और दूसरों की रक्षा हेतु सूत्र बांधना, संकल्प लेना या वचनबद्ध होना। जिस प्रकार शरीर को सुरक्षित तथा ताकतवर बनाए रखने के लिए रोज़ हम योगा, कसरत या व्यायाम करते हैं और साथ ही अच्छा पौष्टिक भोजन देते हैं, उसी प्रकार श्रेष्ठ, सुंदर एवं पवित्र संकल्पों से मन को सींचकर स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं। कहा भी जाता है ``मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। पवित्र, शुद्ध विचारों से मन को मज़बूत बनाकर आत्मिक भाव रखकर स्वयं की रक्षा संभव हो सकती है। यह रक्षा-सूत्र कलाई पर बांधकर सामने वाले के लिए शुभ भावना, शुभ कामना दी जाती है।

रक्षाबंधन का एक दूसरा अर्थ

रक्षाबंधन का एक दूसरा अर्थ है पवित्र, पावन और शुद्ध बनना, बुराइयों का त्याग करना एवं जीवन में दृढ़ता लाना। भौतिक रीति से आज के समय में किसी की भी रक्षा कर पाना या हो पाना मुश्किल है, क्योंकि यह संसार नश्वर है, तो शरीर भी नश्वर है। आत्मा जो दिव्य, अति सूक्ष्म, चैतन्य शक्ति है, वह ही अजर, अमर, अविनाशी है जिसे कोई मार नहीं सकता, जो शाश्वत है। फिर रक्षाबंधन का महत्व कैसा? वास्तव में मनुष्य आत्मा ही स्वयं का मित्र व शत्रु है। वह स्वयं ही स्वयं की रक्षा कर सकता है या सिर्फ सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव ही सबकी रक्षा कर सकते हैं जो कि निराकार, ज्योतिस्वरूप, जन्म-मरण से न्यारे, हैं।

सृष्टि चक्र की महत्वपूर्ण गतिविधि का हिस्सा

रक्षाबंधन मनाने के पीछे बहुत ही गूढ़ और सुंदर आध्यात्मिक रहस्य है कि पवित्र राखी का धागा या रक्षा-सूत्र जो सीधी कलाई पर बांधा जाता है, हमें याद दिलाता है कि विकारों भरी इस दुनिया में कैसे पवित्र, आत्मिक स्मृति में रहकर निर्विकारी जीवन जीएं। पावन और सभी सांसारिक विकारों से मुक्त यह जीव आत्मा को उसके मूल स्वधर्म शांति व प्रेम की स्मृति दिलाता है। रक्षाबंधन कोई संसार की भौतिकता को भोगने वाला त्योहार नहीं है बल्कि सभी आत्माओं एवं तत्वों को पवित्र बनने का संदेश देने वाले सृष्टि चक्र की महत्वपूर्ण गतिविधि का हिस्सा है। इसकी शुरुआत महाशिवरात्रि के दिन से होती है जब परमपिता शिव अवतरित होकर सभी आत्माओं को पवित्रता रूपी राखी अर्थात् मन, कर्म, वचन से पवित्र बनने तथा श्रेष्ठ, शुभ, पवित्र संकल्पों द्वारा जीवन को सुरक्षित करने का मार्ग बताते हैं। पीला धागा नवीनता, बसंत की ताज़गी, नए युग के आरंभ व जगदम्बा सरस्वती का रंग जो पवित्रता की देवी हैं का यादगार स्वरूप है। फिर बहनें राखी पर भाइयों को तिलक लगाती हैं, जो संदेश देता है कि आप भृकुटि में विराजमान चैतन्य ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा हो। आप उसके स्वमान में टिककर स्वयं को शरीर के भान से मुक्त करो। बहनों भाइयों का मुख मीठा करवाती हैं, जिसका आध्यात्मिक अर्थ है कि आप सभी के मुख के साथ-साथ दिल, बोल तथा संकल्प/जीवन मीठा करें। संसार में व्याप्त दुःख-क्लेश, तनाव, अशांति, रोग-शोक से सबको मुक्त करने हेतु परमात्मा शिव से शक्तियाँ अर्जित कर सभी आत्माओं को प्रदान करें।

रक्षाबंधन का मुख्य उद्देश्य है ही पवित्रता और संस्कारों की राखी बांधना और दिव्य, सात्विक गुणों, श्रेष्ठ ज्ञान को धारण करना व कराना। यह समय ही सभी आत्माओं के पवित्र बनने और विश्व परिवर्तन का है।

ऐतिहासिक महत्व क्या है?

पुराने ज़माने में रक्षाबंधन के उत्सर्ग में ऋषि-मुनि दर्शन करने आने वालों को आशीर्वाद रूप में राखी बांधते थे। संत-महात्मा बुरी शक्तियों से बचने हेतु रक्षा-सूत्र पहनते थे। इसे 'पाप तोड़क', 'पुण्य प्रदायक' पर्व जो 'पाप का विनाश कर पुण्य की स्थापना करे, भी कहा जाता है'। इतिहास में चित्तौड़ की रानी कर्णावती का ज़िक्र है जिन्होंने मुगल शासक हुमायू को राखी भेजकर बहादुर शाह ज़फर से रक्षा की गुहार की थी। हालांकि हुमायू समय पर नहीं पहुंच पाया और रानी कर्णावती को जौहर स्वीकार करना पड़ा। वहीं आधुनिक इतिहास में भी इसका उदाहरण मिलता है, जब नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाल विभाजन के बाद हिंदुओं और मुसलमानों से एकजुट होने का आग्रह किया था तथा दोनों सम्प्रदायों से एक-दूसरे की कलाई पर रक्षा-सूत्र बांधने का निवेदन किया था। -ब्र.कु. निधि,सर्वोदय नगर कानपुर

बहुत ही सहज है राजयोग...

हर व्यक्ति की कामना है कि वो सबसे मिल-जुलकर रहे, खुश रहे, शांतिपूर्वक रहे, लेकिन वो शांति, वो पवित्रता आज ढूंढ़ने से भी नहीं मिल रही है। शायद कहीं कोई ऐसा बिन्दू छूट रहा है जिसे शायद हम समझ नहीं पा रहे हैं, जैसे ही वो बिन्दू हमारी पकड़ में आ जाए तो उपरोक्त सारी बातों का उत्तर हमें मिल जाएगा। कामना की पूर्ति हो जाए। चौथे अंक में आपने समझा कि जब हमें ज्ञान मिल जाये तो उससे हमारे अंदर पवित्रता आ जाती है, और पवित्रता आने के आधार से ही शांति व सुख दोनों की प्राप्ति होनी शुरु हो जाती है। अब जब ये चारो हमारे अंदर आते हैं तो क्या होता है, हम इसकी चर्चा करेंगे।

गतांक से आगे...

प्रेम

संसार में हर एक व्यक्ति प्रेम चाहता है, लेकिन हर कोई व्यक्ति आज निःस्वार्थ प्रेम देने में सक्षम नहीं है। सभी का प्रेम स्वार्थ वाला होता है। कई लोग इसे अलग भाव से भी लेते हैं कि नहीं माँ का प्रेम निःस्वार्थ होता है। यहां यह बात हम स्पष्ट करना चाहेंगे कि माँ अपने बच्चे से प्रेम नहीं करती है बल्कि मोह रखती है। अब हम आपको प्रेम और मोह में अंतर बताना चाहते हैं। मोह हमारा शारीरिक होता है, दैहिक होता है, जो अज्ञानता के कारण है। जबकि प्रेम आत्मिक होता है। उदाहरण के लिए कोई भी नर्स अपने बच्चे को इंजेक्शन नहीं लगा सकती और जब लगाती भी है तो हाथ कांपने लग जाते हैं क्योंकि उसका उसके साथ मोह है। मोह के कारण हमारी कार्य करने की क्षमता घट जाती है, हमारी सहनशीलता घट जाती है। उसका दूसरा स्वरूप कोई भी डॉक्टर दूसरे बच्चे का ऑपरेशन तुरंत कर सकता है लेकिन अपने बच्चे का ऑपरेशन नहीं कर सकता। जब हमें यह आत्मज्ञान हो जाता है कि मेरा बेटा, मेरी बेटी या मेरा घर, मेरा परिवार ये सब मेरे से अलग हैं और जो भी हमारे रिश्ते हैं,

सबसे पहले तो वे आत्मा हैं और एक शरीर लेकर हमारे घर में संबंध निभाने के लिए आए हैं। इसलिए मैं इस ज्ञान के कारण उनसे आत्मा के रूप में जुड़ जाऊंगी, फिर हमारा दैहिक प्यार या मोह प्रेम में बदल जायेगा। निःस्वार्थ प्रेम आध्यात्मिक समझ और पवित्रता के आधार से ही मिलता है। जहां भावनाओं में, विचारों में, व्यवहार में अहंकार व स्वार्थ है, अशुद्धि है वहां संबंधों में प्रेम पनप नहीं सकता। आत्मा वैसे तो अपने आप में ही प्रेम स्वरूप है, प्रेम उसका निजी गुण है लेकिन आज वो उसको भूल चुकी है तो वो उसे संबंधों में तलाशती है और आज संबंध चूंकि देह, वस्तुओं एवं प्राप्तियों के आधार से है इसलिए प्रेम का स्वरूप बदल गया है। आज हर कोई न खुद जी रहा है न दूसरे को जीने दे रहा है। उदाहरण के लिए जैसे आपके पास बाईक है, कार है, मोबाइल फोन है, लैपटॉप है, तो आज आप मोबाइल फोन हैं, वो कैसे, क्योंकि उसे सिर्फ आप यूज़ करना चाहते हैं, पकड़ के रखना चाहते हैं, छोड़ना नहीं चाहते। उसी प्रकार गाड़ी को डेंट लगती और आप शोर मचाते, गाड़ी तो खड़ी है, इसका मतलब आप गाड़ी हैं। आपका तो कोई अस्तित्व ही नहीं है ना! आप या तो गाड़ी हैं, या घर हैं, परिवार हैं, बच्चे हैं या रिश्तेदार। वो तब तक नहीं होगा जब तक हम अपने आपको अलग नहीं समझेंगे। तभी हम एक-दूसरे को सच्चा प्रेम और स्नेह दे सकते हैं। - क्रमशः

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-5

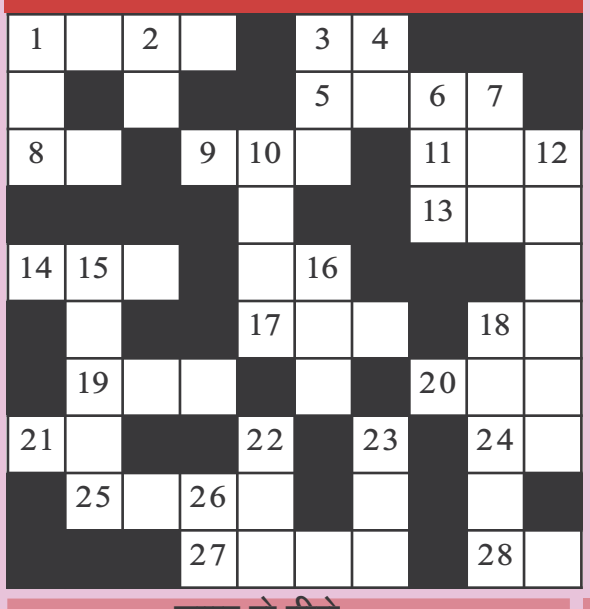

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. नाश,समाप्त, नष्ट (3)
2. राजस्व अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान..., हवन (2)
3. शिक्षा, पाठ, समझानी, सीख (3)
4. कांच का डिब्बा, रूस के प्राचीन बादशाहों की उपाधि (2)
6. हिम्मत, जज्बा (3)
7. चमड़े का मढ़ा हुआ वाद्य यन्त्र, थाप देकर बजाने वाला यन्त्र (3)
10. हम नहीं जानते, परमात्मा के बारे में सन्यासियों की मान्यता (4)
12. रौनक, हलचल, उत्सव का माहौल (3-3)
15. महा विनाश, भारत में कभी .... नहीं होती है (5)
16. सोना, स्वर्ण, धतूरा (3)
18. भगवान का एक नाम, पालना देने वाला, पालक (5)
22. किसी वस्तु का ऊपरी भाग, लेवल (3)
23. स्वस्थ, रोग रहित, तन्दुरुस्त (3)
26. काबू, अधीन, मुग्ध किया हुआ (2)

बायें से दायें

1. विदेश, दूर देश, परदेश (4)
3. दण्ड, अपने पाप कर्मों की... यहां ही भोगनी है (2)
5. जो पिया के साथ है उसके लिए... है (4)
8. आवाज़, ध्वनि, बोल (2)
9. एक से अधिक (3)
11. आराम से दो रोटी खाना है.....(लालच) नहीं रखना है (3)
13. राय, मत, विचार (3)
14. माँ का प्यार,...की मूरत मम्मा (3)
17. घास का एक टुकड़ा, डूबते को..... का सहारा (3)
18. पुण्य का विलोम, इस ..... की दुनिया से (2)
19. तरह, तरीका, विधि, रूप (3)
20. ... क्लेश मिटाओ पाप हरो देवा (3)
21. श्रीकृष्ण को तीर मारने वाला, एक आदिवासी जाति (2)
24. राम-नाम लिखकर समुद्र में पत्थर तैराने वाले वानर राज (2)
25. ज्यों का त्यों, जैसा का वैसा (4)
27. मददगार, साथी, हाथ बटाने वाला (4)
28. खुदा, भगवान, ईश्वर, अल्लाह (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

सम्बलपुर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् प्रतिष्ठित व्यवसायी माधव कुमार डालमीया व उनके परिवार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. पार्वती।

बरेली-आवला(उ.प्र.)। 'शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण' कार्यक्रम में मंचासीन हैं सांसद प्रतिनिधि नेमचन्द मोर्या, ब्र.कु. मनीषा,महा., ब्र.कु. पार्वती व सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पारुल।

अलीगढ़-हरदुआगंज। आर.ए.एफ. परिसर में 'प्रशासन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता' कार्यक्रम के दौरान डिप्युटी कमांडेंट को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिल,गुड़गांव। ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.सत्य प्रकाश व ब्र.कु.अशोक।

दिल्ली-हरिनगर। बी.एस.एफ.भोंडसी,गुड़गांव के जवानों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय 'स्ट्रेस मैनेजमेंट वर्कशॉप' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. नीरू।

गोला गोकर्ण नाथ-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगरपालिका चेयरमैन मिनाक्षी अग्रवाल, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

उधमपुर-अमोढ़ा मोड़। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सी.आर.पी.एस. 137 बटालियन को योगाभ्यास कराते हुए ब्र.कु. ममता व ब्र.कु. बंसीलाल।

दादीजी होती तो ऐसा करती, ऐसा कहती...

अगस्त महीना आते ही सभी के दिलों दिमाग पर दादीजी की यादें तरोताज़ा हो जाती हैं। इतने साल हो गये है दादीजी को अव्यक्त हुए लेकिन आज भी हर बार उनकी कमी का एहसास होता रहता है। प्रश्न उठता है कि हम किसी के साथ इतना दिल से कैसे जुड़ सकते हैं? यह हर ब्राह्मण आत्मा के दिल की बात है। ब्रह्मा बाबा और मम्मा की तरह जिसने भी दादीजी को देखा या सुना उस आत्मा ने अपना जुड़ाव दादीजी के साथ महसूस किया। पूरे कल्प में हमने किसी न किसी रूप में उनकी पालना ली है, उनके साथ सम्बन्ध निभाया है, समीपता का अनुभव किया है। जन्म-जन्मांतर के रिश्तों की यह रेशमी डोर पूरे ब्राह्मण परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है।

उमंग और उत्साह का पंख माना दादी प्रकाशमणि

दादीजी के साथ हम सब की जुड़ी हुई यादें दैहिक, भौतिक या लौकिक न होने से वह हमें सताती या दुःख की लहर नही पैदा करती, ना ही हमारे पैरों की बेड़ी बन जाती है, अपितु वह हमें हिम्मत और हौसला देती है, खुले आसमान में उड़ने के लिए उमंग और उल्लास के पंख देती है। दादीजी की यादें प्रेरणाओं का ऐसा तूफान है जो हमें पुरुषार्थ की ऊँची मज़िल तक ले जाता है। उनका चेहरा नज़र के सामने आते ही पवित्रता और रुहानियत का अनुभव होने लगता है। उनकी रुहानी मुस्कान और चेहरे की दिव्यता को नज़रों में बसाकर किसी की भी आँखें बुराई में डूब नहीं सकतीं। उनके व्यक्तित्व की परछाई को अपने साथ महसूस करते हुए कोई गलत कर्म के बारे में सोच भी नहीं सकता। ऐसा चमत्कारी रुहानी व्यक्तित्व था दादीजी का।

संकल्पों से उड़ाया संस्थान् को ऊँची उड़ान

दादीजी के बारे में सोचते हुए एक बात प्रखरता से महसूस होती है कि अगर कोई व्यक्ति संकल्पों की उड़ान भरना चाहे तो उसकी सीमायें केवल आसमान ही हो सकती है। दादीजी ने यज्ञ की बागडोर को संभालते हुए यज्ञ और ब्राह्मण परिवार की उन्नति के संकल्पों की ऊँची ते ऊँची उड़ान भरी और उनके हर संकल्प के साथ यज्ञ, यज्ञ वत्स और सेवाओं में दिन दुनी और रात चौगुनी उन्नती का अनुभव किया। उनके स्वयं के पुरुषार्थ और स्थिति की बात हो, ब्राह्मण परिवार की उन्नति की बात हो, यज्ञ व्यवस्थापन, समर्पित भाई-बहनों की या फिर गृहस्थियों की बात हो उनके श्रेष्ठ और बेहद के संकल्पों के पारस-स्पर्श से सबका सोना हो गया।

दादीजी खुद एक संस्था थीं

प्रश्न यह उठता है कि हमारी सोच का दायरा कितना बड़ा हो सकता है? हम सभी हमेशा कहते हैं कि "Think globally & act locally" विश्व कल्याण के बारे में सोचते हुए अपने कर्म क्षेत्र पर वैसा ही कर्म करें। यह बात बिल्कुल सच है कि अगर हम विश्व के परिप्रेक्ष्य में सोचते हुए कोई भी कर्म करते हैं तो पहली बात तो कर्म प्रभावशाली होता है और उस कर्म से सारे विश्व की आत्माओं को लाभ पहुंचता है। विश्व महाराजन बनने वाली आत्माओं के हर कर्म के पीछे अक्सर पूरे विश्व के कल्याण की भावना समाई होती है। दादीजी के चरित्र के हर कर्म में यह अनुभव होता रहा कि यही विश्व महाराजन बनने वाली आत्मा के कर्म और लक्षण हैं। जब वे किसी एक व्यक्ति या संगठन को संबोधित करतीं तब उनके सामने न केवल वह व्यक्ति या संगठन होता बल्कि पूरे विश्व की आत्मायें इमर्ज होती, इसलिए आज भी उनके संकल्प और शब्दों का प्रभाव न केवल यज्ञ लेकिन पूरे विश्व में दिखाई देता है।

उनकी मधुर स्मृति आज भी सबके ज़हन में

सभी दादियों ने बाप-दादा से उनको मिली हुई पालना और पढ़ाई के वर्से को हम तक पहुंचाया और आज भी पहुंचा रही हैं। उन्होंने अपने जीवन से बाप-दादा के प्यार, पालना और पढ़ाई का सबूत दिया जिसका हम भी प्रखरता से अनुभव कर रहे हैं। उनके साथ रहते हुए हमने तो यह जान लिया कि ब्रह्मा बाबा ने इनको कैसी पालना दी होगी! परंतु अब हमारी बारी है दादियों से मिली पालना के वर्से को आगे बढ़ाने की। आज जो आत्माएं आ रही हैं, हो सकता है कि उन्होंने दादीजी को नहीं देखा हो, तो क्या वे हमारे व्यक्तित्व और व्यवहार से दादीजी की पालना का अनुभव कर सकते है?

दादियों का हर संकल्प, बोल और कर्म यज्ञ सेवा और यज्ञ रक्षा के प्रति समर्पित रहा, तो हमें भी अपने संकल्प, बोल और कर्म को उस ऊँचाई तक पहुंचाना होगा। अगर हम सच्चे दिल से दादीजी को याद कर उनका स्मृति दिवस मनाना चाहते हैं तो हर साल कम से कम दादीजी की एक योग्यता को अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

- ब्र.कु.कल्पना, राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू।

शब्दों का प्रभाव पहुंचा अमेरिका

दादीजी 10 जून 1999 में अमेरिका के वॉशिंगटन डीसी शहर में गईं और नेशनल प्रेस क्लब के नेताओं के सामने शांति की शक्ति विषय पर अपने उद्गार व्यक्त किए। उन्हें राष्ट्रीय मेहमान बनने का सम्मान उस देश ने दिया और उस समय के मेयर एन्थनी विलीयम्स ने उस दिन को दादी प्रकाशमणि दिवस के रूप में मनाना घोषित किया। पिछले 15 सालों से 10 जून वॉशिंगटन शहर में "दादी प्रकाशमणि दिवस "के रूप में मनाया जाता है। यही है वास्तव में वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी सोच को पंख देना।

आज हममें से हरेक दादीजी की पालना और उनसे मिले हुए प्यार का वर्णन करते हुए थकता नहीं है लेकिन हमें अपने आप से यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए कि हमने अपने जीवन और व्यवहार में उनके समान कितने गुणों को अपनाया है? हमारे आसपास रहने वाले लोग हमारे व्यवहार, बोल और कर्म से कितना परसेन्ट दादीजी की परछाया का अनुभव करते हैं?

राँची-झारखण्ड। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला।

हरदोई-उ.प्र.। रक्षण प्रेक्षा ग्रह ऑडिटोरियम में आयोजित 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम में मारुती कार कॉन्सेप्ट ऑनर संजीव अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. अविनाश।

ऋषिकेश। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् एम्स के डायरेक्टर डॉ. रामकुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आरती।

फर्रुखाबाद-बीबीगंज। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. गिरीजा, सदाकत हुसैन सेथली (इमाम), ब्र.कु. मंजू, जिला जज राजन चौधरी, उद्योगपति व भाजपा पार्टी महिला मोर्चा की कोषाध्यक्ष मिथलेश अग्रवाल, डॉ. अनीता सूद व एडवोकेट ब्र.कु. सुरेश गोयल।

दिल्ली-लाजपत नगर। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के समापन अवसर पर समूह चित्र में सर्वोदय विद्यालय की प्रिन्सीपल अल्का अग्रवाल, वाइस प्रिन्सीपल सुरक्षा बत्रा, ब्र.कु. चन्द्र, ब्र.कु. जया व प्रतिभागी बच्चे।

वोरीगुम्मा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान तहसीलदार पंचानन पात्र को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु. शुषमा।

भरतपुर-राज.। पूर्व महाराजा के पुत्र विश्वेन्द्र सिंह,विधायक कुम्हेर डीग को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता व ब्र.कु. संतोष। साथ हैं ब्र.कु. जुगलकिशोर व डॉ. सुरेश यादव।

सुनाम-पंजाब। जैन साध्वी यशोधरा जी व साथी बहनों के सेवाकेन्द्र आने पर आयोजित कार्यक्रम में वे अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. मीरा।

उदयपुर-राज.। जियोलॉजी सर्वे ऑफ इंडिया (जी.एस.आई.) में 'हैप्पीनेस एंड पर्सनालिटी डेवलपमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. डी.बी. गुहा,रिजनल ट्रेनिंग इंस्टीट्युट जयपुर इन जी.एस.आई., ब्र.कु.रीटा व अन्य।

सुन्दरपुर-वाराणसी। ब्रिज एकेडमी स्कूल में आध्यात्मिक शिक्षा पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.अंजली, ब्र.कु.प्रमोद, प्रधानाचार्य जय प्रकाश दूबे, टीचर्स एवं छात्र-छात्राएं।

जम्मू। गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज में आयोजित 'गुड बाय डायबिटीज़' कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं माननीय चौधरी लाल सिंह,मिनिस्टर फॉर हेल्थ एंड मेडिकल एज्युकेशन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन, डॉ. श्रीमंत साहू,माउण्ट आबू व ब्र.कु. रविन्दर।

शिमला। तम्बाकू निषेध दिवस पर सेन्ट्रल जेल में कार्यक्रम के पश्चात् जेल अधीक्षक प्रेम सिंह वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

अकर्म में कर्म को देखो

-ब्र.कु. विकेज घाटकोपर मुंबई

जो मनुष्य कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म को देखता है वो बुद्धिमान योगी है इसका भाव क्या है? कर्म और अकर्म का पहले भेद तो पता होना चाहिए। कर्म किसको कहा जाता है और अकर्म किसको कहा जाता है? कर्म तो हम सभी समझ सकते हैं कि इस संसार में अपने संस्कारों के आधार पर हम जो भी कार्य करते हैं उसे कर्म कहा गया। जिस कर्म का फल नहीं होता है उसे अकर्म कहा जाता है। जैसे आज हमने एक बीज बोया, ये कर्म मैंने किया। उस बीज के अंकुरित होने से पौधा निकला। वो पौधे से धीरे-धीरे वृक्ष बना और वृक्ष के ऊपर फल लगे। फल को तोड़कर मैं खाती हूँ, तो दोनों कर्म मैं खुद ही कर रही हूँ। बीज बोने का कर्म भी मैंने ही किया और बीज से जो वृक्ष निकला, वृक्ष पर जो फल लगे, उसको तोड़ने का कर्म भी मैं ही करती हूँ। दोनों कर्मों में कोई अंतर है या नहीं है? बीज बोना भी कर्म है, फल तोड़कर खाना भी कर्म है .... दोनों कर्म में कोई अंतर है या नहीं है? बीज बोने का जो कर्म है, वह श्रेष्ठ कर्म है, क्योंकि एक बीज बोने से हमें हज़ारों फल की प्राप्ति होती है। इसलिए ये कर्म श्रेष्ठ है। लेकिन फल तोड़कर जो हमने खा लिया वो संतुष्टि है। उसका आगे कोई फल नहीं मिलता है। उसको कहा जाता है अकर्म। जिस कर्म का फल नहीं है, उसको अकर्म कहा जाता है।

कर्मों की गुह्य गति

परमात्मा अर्जुन को यहाँ पर कर्मों की गुह्य गति के बारे में बताते हैं कि ``जो मनुष्य कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म को देखता है तो वह बुद्धिमान योगी है।'' अब अकर्म में कर्म को देखना इसका भावार्थ यह है कि अकर्म हमने जो किया अर्थात् फल खाया। यह अकर्म हुआ, इसका कोई दूसरा फल नहीं मिलेगा। अगर उसमें भी कोई श्रेष्ठ कर्म करे अर्थात् उस बीज को पुनः धरती में डाल कर के बोये - ये है अकर्म में कर्म को देखना अर्थात् वो बुद्धिमान है।

ऐसे जीवन में जो श्रेष्ठ कर्म करता है और उसके फलस्वरूप अकर्म भी करने लगता है, लेकिन उस अकर्म में पुनः श्रेष्ठ कर्म करने की क्षमता जिसके अंदर है। साधारणतः हम सभी लोग क्या करते हैं? फल खाकर बीज को फेंक देते हैं। हमने अकर्म में कर्म को नहीं देखा लेकिन जो व्यक्ति पुनः उस बीज को बोता है तो पुनः उसको हज़ारों फल की प्राप्ति होती है। साधारणतः हम क्या करते हैं कि मैंने जो कर्म किया उसका फल मिला, मैंने उसको स्वीकार किया और संतुष्ट हो गये। उसी कर्म में आगे कर्म करने की प्रेरणा हम नहा प्राप्त करते हैं। बुद्धिमान योगी जो होता है, वह ऐसे अकर्म में भी कर्म को देखना आरंभ करता है। जिसके कर्मों का आरंभ और फल की प्राप्ति में कामना का त्याग है तथा वह सांसारिक आश्रय रहित हो गया है, परमात्मा की याद में नित्य तृप्त है, उसके कर्मों में कोई त्रुटि नहीं होती है। वह ज्ञान रूपी अग्नि से विकर्म अर्थात् विकृत कर्म जो हुए हैं, उसको भी भस्म कर देते हैं। जो विकारों के वश किया गया कर्म है उसको भी भस्म करने की क्षमता वह रखता है। ये कर्मों की गुह्य गति भगवान ने अर्जुन को समझायी और फिर आगे कहते हैं कि जिसने शरीर की इंद्रियों और अंतःकरण को वश किया हुआ है, जो **अपग्रही** है, वह शरीर सम्बन्धी कर्म करते हुए भी कर्म के बंधन में नहीं बंधता है। जो ईर्ष्या से परे, द्वंद्वों से रहित, सफलता व असफलता में समान हैं, जो संगदोष की आसक्ति से रहित है, अभिमान से मुक्त है, जिसकी बुद्धि ज्ञान स्थिर है और जो सदा संतुष्ट आत्मा है वह यज्ञ के लिए ही कर्म करता है, उसके सब पूर्व विकर्म दग्ध हो जाते हैं। ये उसके गुण हैं कि हम कैसे पुराने विकृत कर्म को दग्ध कर सकते हैं? कई बार लोग कहते हैं कि हमें दूसरों के लिए ईर्ष्या नहीं है। लेकिन लोग हमारे लिए ईर्ष्या करते हैं तो क्या किया जाए? जो ईर्ष्या से परे है, वो द्वंद्वों से अतीत है। जहाँ ईर्ष्या होती है, वहीं द्वंद्व आरंभ हो जाता है। मुझे किसी के लिए ईर्ष्या नहीं है। लेकिन दूसरा जब मेरे प्रति ईर्ष्या करता है, तो अंदर द्वंद्व चलता है। तब अपने मन को कैसे शांत रखें? लेकिन यहाँ पर सोचने की बात यह है कि ईर्ष्या कब उत्पन्न होती है? जब किसी का भाग्य बहुत सुदंर होता है तो उसको देखकर के ही लोग ईर्ष्या करेंगे। अब मैंने जो भाग्य प्राप्त किया है उसे मैंने अपने कर्मों से प्राप्त किया है। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

शांति से सफलता है, तनाव से नहीं

प्रश्नः- अगर हमें लगे कि टेंशन लेना तो स्वाभाविक है तो क्या करें?

उत्तरः- यदि कोई कहे कि मेरे घुटने में दर्द है और हमने उसको `नॉर्मल' बोल दिया तो फिर क्या हम उसका ईलाज करायेंगे? नहीं। जब तक हमें यह अनुभूति नहीं होती है कि यह साधारण नहीं है ये दर्द है, ये मेरा स्वास्थ्य का स्तर नहीं है। फिर मैं कुछ न कुछ उसके लिए करूंगा। लेकिन अगर मैंने स्वीकार कर लिया कि ये तो साधारण है तो क्या होगा? हम उसी के साथ चलना शुरू कर देंगे।

प्रश्नः- इसका मतलब ये होगा कि आप उसके ऊपर काम ही नहीं करेंगे, बाकी सारी चीज़ों के ऊपर आप काम करते जायेंगे।

उत्तरः- आप काम नहीं करेंगे, क्योंकि स्वाभाविक क्या है, इसका बिलीफ बहुत स्पष्ट होना चाहिए। क्योंकि हम कंडीशन्ड हैं कि जो चीज़ नॉर्मल है मतलब वो ठीक है, जैसे ही हमने किसी चीज़ को कहा कि ये ठीक नहीं है तो हम उसके ऊपर कुछ मेहनत करते हैं। मान लो कि आप ऑफिस से घर पहुंचे, आपको थोड़ा सा बुखार हो गया है। आपने थर्मामीटर पर देखा कि 100 डिग्री है या 101 डिग्री है। आपको मालूम है कि ये ठीक नहीं है। सबको ये पता है कि ये जो त्रिभुज का निशान बना है वहां तक ठीक है। पारा अगर उससे थोड़ा सा भी ऊपर होगा तो वो नॉर्मल नहीं है। मतलब कि मुझे बुखार है। तो मैं तुरंत डॉक्टर के पास जाऊंगी और अपना ईलाज कराकर दवाई लूंगी और बार-बार थर्मामीटर लगाकर चेक करती रहूंगी कि ये ठीक हुआ कि नहीं। जब थर्मामीटर में दिख गया कि ये ठीक हो गया है, तब हम दवाई नहीं लेंगे। अब टेंशन दूर करने के लिए दवाई क्यों नहीं ले रहे हैं? क्योंकि हमने कह दिया कि ये तो स्वाभाविक है। हम फिर थोड़े ही उसको खत्म करने का प्रयास करेंगे। पहले तो ये कि इस बिलीफ सिस्टम को बहुत अच्छी तरह से चेक करना पड़ेगा कि स्ट्रेस होना स्वाभाविक है, तनाव होना स्वाभाविक है, यह हरेक के जीवन का अंग बन गया है। टेंशन कुछ भी नहीं है, ये एक दर्द है जो आता है मुझे बताने के लिए कि जीवन में कुछ परिवर्तन करना है।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्नः- हम थोड़ा-थोड़ा स्ट्रेस को कहते हैं नॉर्मल है। लेकिन वो जैसे ही ज़्यादा होने लगता है या जब हमसे वो बर्दाश्त नहीं होता है तब हम उसका समाधान ढूंढते हैं।

उत्तरः- तब भी हम उसका समाधान कहां ढूंढते हैं कि ये सब ठीक हो जाये, मेरा स्ट्रेस ठीक हो जायेगा। कभी हम परिस्थिति के अंदर उसका समाधान ढूंढते हैं, तो कभी लोगों में समाधान ढूंढते हैं कि परिस्थिति ठीक हो जाये तो मेरा स्ट्रेस ठीक हो जायेगा।

प्रश्नः- अब परीक्षा आ रही है तो आप स्ट्रेस में तो आयेंगे ही।

उत्तरः- हम अगर बच्चे को ये समझा सके कि `परीक्षा के समय रिलैक्स रहना नॉर्मल है' तो बच्चा मन लगाकर पढ़ेगा भी और अच्छा प्रदर्शन भी करेगा। क्योंकि उसको इससे बढ़ावा मिलता है। क्या कभी हमने बच्चे से ये कहा कि रिलैक्सड रहना नार्मल नहीं है या बच्चे को रिलैक्सड ही रहना है, नहीं। हम तो यही कहते हैं कि टेंशन होना स्वाभाविक है और खुद भी इतने टेंशन में होते हैं कि बात मत पूछो। - क्रमशः

कथा सरिता

समानता का एहसास

एक बुज़ुर्ग पिता की दो बेटियां थी। दोनों की शादी हो चुकी थी। उनमें से एक का विवाह एक कुम्हार से हुआ और दूसरी का एक किसान के साथ। कई दिनों से वह अपनी बेटियों से नहीं मिला था। सो, उसने मिलने का कार्यक्रम बनाया और पहुंच गया उनसे मिलने। पहली बेटी से हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार हमने बहुत परिश्रम किया है और बहुत सामान बनाया है। बस यदि वर्षा न आए तो हमारा कारोबार खूब चलेगा। बेटी ने पिता से आग्रह किया कि वो भी प्रार्थना करे कि बारिश न हो। फिर पिता दूसरी बेटी से मिला जिसका पति किसान था। उससे हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार बहुत परिश्रम किया और बहुत फसल उगाई है, परंतु वर्षा नहीं हुई है। यदि अच्छी बरसात हो जाए तो खूब फसल होगी। उसने पिता से आग्रह किया कि वह प्रार्थना करे खूब बारिश होने की। एक बेटी का आग्रह था कि पिता वर्षा न होने की प्रार्थना करे और दूसरी का इसके विपरीत कि जमकर बारिश हो। पिता बड़ी उलझन में पड़ गया। समाधान क्या हो? पिता ने बहुत सोचा और दोबारा से अपनी दोनों पुत्रियों से मिला। उसने बड़ी बेटी को समझाया कि यदि इस बार वर्षा नहीं हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी छोटी बहन को देना। फिर छोटी बेटी के पास गए और उनको मिलकर समझाया कि यदि इस बार खूब वर्षा हुई तो तुम अपने लाभ का आधा हिस्सा अपनी बड़ी बहन को देना। दोनों बेटियों को अपनी समानता का एहसास हुआ। तभी दोनों पुत्रियों ने कहा - पिता जी, जो कुदरत करेगी, वही ठीक होगा।

मैं धर्म हूँ

जनक के राज्य में किसी नागरिक से कोई अपराध हो गया। जनक ने उसे राज्य से निष्कासित होने का दंड दे दिया। नागरिक ने पूछा, `महाराज, आप यह बता दें कि आपका राज्य कहां तक है, ताकि मैं उससे बाहर निकल सकूं।' यह सुनकर राजा जनक सोच में पड़ गए कि आखिर उनके राज्य की सीमा है कहां! पहले तो उन्हें सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना अधिकार प्रतीत हुआ और फिर केवल मिथिला नगरी पर। आत्मज्ञान के झोंके में वह अधिकार घटकर प्रजा तक और फिर उनके शरीर तक सीमित हो गया। अंत में उन्हें अपने शरीर पर भी अधिकार का भान नहीं हुआ। वे बोले, `आप जहां चाहें रहें, मेरा अधिकार कहीं नहीं है।' नागरिक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, `इतनी बड़ी पृथ्वी के अधिकारी होते हुए भी आप सभी वस्तुओं के प्रति कैसे तटस्थ हो गए?' राजा जनक बोले, `संसार के सभी पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रों के अनुसार न तो कोई अधिकारी सिद्ध होता है और न कोई अधिकार योग्य वस्तु ही है। अतः मैं किसे अपने अधिकार में समझूं? जहां तक पृथ्वी का अधिकारी समझने की बात है, मैं स्वयं के लिए कुछ नहीं करता। जो भी करता हूँ, वह देवता, अपने पितर और अतिथि सेवा के लिए करता हूँ। इसलिए पृथ्वी, जल, वायु और प्रकाश पर मेरा अधिकार कैसे हुआ?'राजा जनक के मुख से यह बात सुनते ही नागरिक ने अपना चोला बदल लिया और उनसे बोला, `महाराज, मैं धर्म हूँ। आपकी परीक्षा लेने के लिए सामान्य नागरिक के वेश में आपके राज्य में वास कर रहा था। आपके विचार सुनकर अब मैं तय कर चुका हूँ कि इस धरती पर आप ही सर्वश्रेष्ठ राजा हैं।'

जैसी करनी वैसी भरनी

एक गांव में रहीम नाम का एक किसान रहता था। वह बड़ा सरल, मिलनसार और मेहनती था। गांव के सभी लोग उसे पसंद करते थे क्योंकि वह लोगों की मदद करने को हरदम तैयार रहता था। अपनी मेहनत से उगाई फसल बेचकर वह अच्छी-खासी कमाई कर लेता था। उसी गांव में दूसरा किसान रफीक भी रहता था। रफीक और रहीम के खेत आस-पास ही थे। यह बात रफीक को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी कि सभी गांव वाले रहीम को अच्छा मानते थे। वह रहीम से नफरत करता था। रहीम तो हमेशा अपने खेतों पर काम करता रहता था, लेकिन रफीक इधर-उधर घूमने में ही समय निकाल देता। वह हमेशा ऐसे मौके की तलाश में रहता था जिससे वह रहीम को नुकसान पहुंचा सके। एक साल रहीम के खेत में बहुत अच्छी फसल पैदा हुई। यह देखकर रफीक को बड़ी जलन हुई। फसल कटने से कुछ दिन पहले एक दिन मौका पाकर उसने रहीम के खेत में आग लगा दी। आग फैलने लगी तो रफीक का खेत भी जलने लगा। गांव वालों को पता चला कि रहीम के खेत में आग लगी है तो वे जी-जान से आग बुझाने में जुट गए। रहीम की आधी फसल जलने से बच गई, लेकिन रफीक के खेत की ओर चलने वाली तेज़ हवा के कारण आग ने उसकी पूरी फसल चौपट कर डाली। लोग चाहकर भी रफीक की मदद नहीं कर पाए। यह उसकी लगाई हुई आग का परिणाम था जो उसे ही भुगतना पड़ा। वह अपना सिर पकड़ कर बैठ गया। अब उसकी समझ में आ गया था कि दूसरों के लिए गड्ढ़ा खोदने वाला पहले खुद उसमें गिरता है।

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी एमाले के अध्यक्ष के.पी. शर्मा ओली को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. किशोर, ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. तिलक।

जयपुर-कमल अपार्टमेंट। नगरपालिका के चेयरमैन चन्द्रभारिया जी को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वाति।

नुवाकोट-नेपाल। भूकम्प पीड़ितों को राहत सामग्री बांटने से पूर्व ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. किशोर, ब्र.कु. ललिता, ब्र.कु. विजय व अन्य।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ब्र.कु. युवाओं के लिए आयोजित योग भट्ठी कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनीता। साथ हैं ब्र.कु पीयूष। सभा में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. मनीषा व ब्र.कु. भाई।

गया-ए.पी. कॉलोनी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं एम.एस.वाय कॉलेज के प्रिन्सीपल विजय जी, ब्र.कु. सुनीता, मीरा बहन व सुधा डेरी के एम.डी. कौशल जी।

कानपुर-केशव नगर। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व मंत्री बालचन्द्र मिश्र, राजयोगिनी ब्र.कु. दुलारी, ब्र.कु. निधि, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. अरुण, ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. शशि।

नीयत से बनती है नियति...

सभी का भाग्य पूर्व निर्धारित है या बनाया जाता है, इसको लेकर सभी दिग्भ्रमित हैं। भाग्य का आधार कर्म है या कर्म से ऊपर भी कुछ है! प्रश्न थोड़ा सा उलझा हुआ लग रहा है, लेकिन इसका उत्तर बहुत सीधा सा है कि जो कर्म हम कर रहे हैं उस कर्म की नीति क्या है और किस नीयत से किया जा रहा है।

किसी भी व्यक्ति एवं स्थान की एक नियति होती है और वह अबाध्य होती है, नियति के अनुरूप चीज़ें घटती हैं। अब प्रश्न उठता है कि नियति होती क्या है और बनती कैसे है?

नीति से नियति का निर्माण होता है

नीति का मतलब है कि व्यक्ति का उद्देश्य क्या है? वह क्या सोचता है और क्या करता है? किसे वो महत्व देता है? इसको एक उदाहरण से हम समझ सकते हैं। इतिहास में महाभारत एक प्रचलित महाकाव्य है जिसके अंदर दिखाया गया कि महाराजा शान्तनु के वंशज कौरव और पांडव थे। अक्सर उस कहानी को आप पढ़ें तो आप पायेंगे कि कौरव सदा ही षड़यंत्रकारी, झूठे एवं अहंकारी थे। उनके जीवन का उद्देश्य अपने को स्थापित तो करना था, परंतु साथ ही साथ दूसरे को भी नीचे गिराना था। उनकी नीति में पाप तथा पुण्य की कोई परिभाषा नहीं थी। वहीं दूसरी ओर पांडवों को सदा ही सदाचारी, सत्य, न्यायप्रिय, त्यागी एवं परोपकारी दिखाया गया है। औरों की रक्षा के लिए वे अपने प्राणों की बाज़ी लगा देते थे। धर्म पर उनकी अगाध आस्था थी। उनकी नीति धर्म आधारित थी। जिस आधार से उनकी नियति बहुत अच्छी हुई या यूँ कह सकते हैं कि अच्छे भाग्य का निर्माण हुआ।

> **नियति कर्मों का परिणाम होती है। नीयत के अनुसार नियति होती है। जैसा हम सोचते हैं और जो हम कर्म करते हैं, वैसे ही हमारी नियति अर्थात् भाग्य का निर्माण होता है। सतत् सत्कर्म, सदाचरण एवं सद्भाव के द्वारा हम सर्वश्रेष्ठ नियति बना सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमने कर्म किया तो नियति अत्यंत कष्टकारक हो सकती है।**

अब यहां प्रश्न उठता है कि क्या हम नियति का निर्माण कर सकते हैं? निश्चित रूप से कर सकते हैं। नियति कर्मों का परिणाम होती है। नीयत के अनुसार नियति होती है। जैसा हम सोचते हैं और जो हम कर्म करते हैं, वैसे ही हमारी नियति अर्थात् भाग्य का निर्माण होता है। सतत् सत्कर्म, सदाचरण एवं सद्भाव के द्वारा हम सर्वश्रेष्ठ नियति बना सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमने कर्म किया तो नियति अत्यंत कष्टकारक हो सकती है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

अभी तक जो कुछ भी हमारे साथ घटित हुआ है उसे नियति मानना दुर्भाग्यपूर्ण होगा, क्योंकि घटना का आधार हमारे अंदर की नीति और रीति है। जब नियम ठीक होंगे और वे विधिपूर्वक होंगे तो कुछ भी असंभव नहीं होगा।

बस करना क्या है, अपने आपको सुबह उठते ही अच्छे कर्म करने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ करना है। उसके लिए पूरे दिन की दिनचर्या निर्धारित करनी है तथा साथ ही साथ अटेन्शन से विधिपूर्वक श्रेष्ठ कर्म करना है। याद रहे, जो भी हम कर्म करें, वे अति श्रेष्ठ व परोपकार से भरा होना चाहिए। उससे हमें दुआयें भी मिलेंगी तथा हमारा भाग्य भी श्रेष्ठ हो जायेगा।

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः- मैं एक 40 वर्षीय महिला हूँ। मेरा प्रश्न है कि यदि हम किसी को ब्याज पर पैसा देते हैं तो क्या उससे मिले हुए ब्याज को हम अपने और ईश्वरीय सेवा में लगा सकते हैं? इससे हमारा कोई कर्मों का हिसाब-किताब तो नहीं बनता? और मेरा दूसरा प्रश्न है कि यदि किसी ने पूर्व में हमें मदद की है और उसकी हमें याद आती है तो क्या ये गलत है?

उत्तरः- अब से 100 वर्ष पूर्व तो ब्याज पर धन का लेन-देन वर्जित था। इसे पाप समझा जाता था। परंतु अब पिछले 100 वर्षों से यह मुख्य व्यवसाय बन गया है, इसलिए कलयुग की प्रथा अनुसार इसे गलत तो नहीं माना जा सकता। जिसे आप ब्याज पर धन दे रहे हैं, एक तरह से यह उसकी मदद करना भी है। परंतु यदि आप उससे अत्यधिक ब्याज लेते हैं तो यह पाप के खाते में जाता है। परंतु यदि ब्याज की दर उचित है तो आप उसे कहीं भी यूज़ कर सकते हैं। इससे कर्मों का हिसाब-किताब नहीं बनता। लेकिन हाँ, यदि उस व्यक्ति और आपके बीच में खींचतान होती है तो कर्मबंधन अवश्य बनता है।

जिसने हमें समय पर मदद की होती है, उसके हम एहसानमंद भी होते हैं। परंतु जब भी उसकी याद आए, उसका सच्चे मन से शुक्रिया करें और यह याद करें कि शिव बाबा ने ही उसके द्वारा मदद की और बाबा को धन्यवाद दें। फिर इसमें कोई हिसाब नहीं बनेगा।

प्रश्नः- मैं एक 30 वर्षीय बहन हूँ। मैंने ज्ञान भी लिया है, परंतु मेरी एक समस्या है कि मेरे मन में देवी-देवताओं के लिए और सभी अच्छे लोगों के लिए भी बुरे विचार आते हैं। यदि मैं किसी के लिए अच्छा भी सोचती हूँ तो तुरंत मेरी सोच नेगेटिव हो जाती है। मैं अपने इन नेगेटिव विचारों से बहुत परेशान हूँ, पता नहीं ये क्यों हो रहा है। कृपया निदान बतायें।

उत्तरः- कई बार ये नेगेटिव विचार व्यक्ति के अपने पूर्व संस्कारों के कारण होते हैं, तो कई बार किसी भटकती आत्मा के कारण ये स्थिति बनती है। आजकल बहुत लोग जीवघात कर रहे हैं, इन आत्माओं को पुनर्जन्म जल्दी नहीं मिलता और ये अंतरिक्ष में भटकती रहती हैं। इनके नेगेटिव वायब्रेशन्स भी लोगों पर पड़ते हैं। कई लोगों को जीवघात करने की गहरी प्रेरणा भी देते हैं।

इनके प्रभाव से बचने के लिए आप सारे दिन में 108 बार अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, अर्थात् हर घण्टे में 10 बार यह अभ्यास करें। इससे आप भटकती आत्माओं के प्रभाव से मुक्त हो जायेंगी। साथ ही आप पानी चार्ज करके भी पीयें।

आप प्रतिदिन 1 अव्यक्त मुरली का अध्ययन करें। उसकी मुख्य बातें नोट करें। अपनी प्योरिटी को बहुत बढ़ायें और स्वमान की अन्य बातों का भी अच्छा अभ्यास करें। आप जो बाबा का बैज पहनती हैं, उसे दायें हाथ में लेकर 21 बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और ये बैज रात-दिन पहनें। यदि आप बैज नहीं पहनती हैं तो पहनना शुरु करें। भले ही अंदर लगा लें। प्रतिदिन सवेरे उठकर योग का आनंद लें तो आप इससे शीघ्र ही मुक्त हो जायेंगी।

प्रश्नः- मैं 50 वर्षीय महिला हूँ। मेरे 2 बच्चे बिज़नेस करते हैं, परंतु बहुत मेहनत करने के बाद भी उन्हें उचित सफलता नहीं मिल पा रही है। मुझे ऐसा लगता है कि ये मेरे पास्ट के बुरे कर्मों का परिणाम है। मैं अमृतवेले योग भी करती हूँ, मैंने बाबा को पत्र भी लिखा है, परंतु मुझे सफलता नहीं मिली। क्या करूँ?

उत्तरः- कुछ लोगों को सहज ही जीवन में सफलता मिलती है, वे तो अति भाग्यवान हैं। कुछ लोगों को कुछ मेहनत के बाद सफलता मिलती है, वे भी भाग्यवान हैं। परंतु जब मेहनत के बाद भी सफलता ना मिले तो समझना चाहिए कि पास्ट के कर्मों के कुछ विघ्न सामने आ रहे हैं।

इसके निवारण के लिए आप एक 21 दिन की विघ्न विनाशक योग भट्ठी करें। ये भट्ठी अमृतवेले के अतिरिक्त हो। एक भी दिन मिस ना हो। योग बहुत पॉवरफुल हो तो यह विघ्न अवश्य हट जायेगा। योग से पहले यह संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ और इस योग की शक्ति से मेरे इन दोनों बच्चों के विघ्न नष्ट हो जाएं।

अपने दोनों बच्चों को भी सिखाना कि एक तो वे पुण्य कर्म करें और दूसरा किसी व्यसन के शिकार ना हों। अपनी मनोस्थिति को अच्छा रखें और जब भी सवेरे उठें तो 7 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। बस ऐसा करने से उनके लिए सफलता का द्वार खुल जायेगा।

प्रश्नः- मैं सुनीता दसवीं क्लास में हूँ। मैं पढ़ने में बहुत कमज़ोर हूँ। कृपया उपाय बतायें।

उत्तरः- आप जैसी ही एक दिल्ली की लड़की जो सेकेण्ड क्लास से ही ज़्यादा मार्क्स नहीं ला पाती थी, कुछ अच्छे अभ्यास करने से हाई स्कूल में उसके 88 प्रतिशत मार्क्स आए। आप भी पढ़ाई लिखाई में बहुत होशियार हो सकती हैं। पहले तो आधे घण्टे सवेरे-शाम अच्छा योगाभ्यास किया करें, इससे आपको मनइच्छित सफलता मिलेगी।

आप सवेरे उठते ही 5 बार याद करना – मैं बुद्धिमान हूँ... मैं चरित्रवान हूँ... मैं एकाग्रचित्त हूँ... मैं पढ़ाई में बहुत होशियार हूँ। पानी जब भी पीयो, उसे इस संकल्प से चार्ज करना कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। पानी को दृष्टि देकर यह संकल्प 7 बार करना और फिर यह संकल्प करना कि इस पानी को पीने से मेरी बुद्धि का विकास हो। साथ में किसी भी टाइम अपने ब्रेन को एनर्जी देना।

जब भी पढ़ाई या होमवर्क शुरु करो अथवा स्कूल के हर पीरियड के प्रारंभ में ये अभ्यास करना – मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी हूँ... मन-बुद्धि की मालिक हूँ और फिर अपने मन-बुद्धि से बातें करना कि हे मेरे मन! तू शांत रहा कर। हे मेरी बुद्धि! अब जो भी मुझे पढ़ाया जाए या जो भी मैं पढ़ूँ, तू उन सबको ग्रहण कर लेना। इससे आपकी बौद्धिक शक्ति बढ़ने लगेगी। साथ ही साथ चलते-फिरते ये संकल्प कई बार करते रहना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। ये सब आप 3 मास करना, आप होशियार विद्यार्थी बन जाएंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

7 कदम राजयोग की ओर...

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

ईश्वरीय सेवा के साथी मनोहर इंद्रा दादी, गंगे दादी, रतनमोहिनी दादी, हृदयमोहिनी दादी, जानकी दादी, प्रकाशमणि दादी, निर्मलशांता दादी व चंद्रमणि दादी।

वे हरेक के स्वास्थ्य का ध्यान रखती थीं

मुझे दादीजी ने डिस्पेन्सरी में सेवा के लिए रखा। उस समय कुछ भाई-बहनें दादीजी को मुरली क्लास से पहले गुडमॉर्निंग करने जाते थे, मैं भी जाती थी, दादीजी मेरे से पूछते थे, कौन मधुबन निवासी बीमार है, उनको क्या तकलीफ है? मुझसे पूरा समाचार लेते थे, तो मुझे अच्छा लगता था कि दादीजी सभी का कितना ध्यान रखते हैं। हम कुछ बहनें रात्रि को भी दादी के पास जाते, दादीजी सोने से पहले मुरली ज़रूर पढ़ते थे। दादीजी मुरली से कुछ-कुछ प्वाइंट्स सुनाते थे, साथ-साथ मम्मा-बाबा के साथ की हिस्ट्री भी सुनाते थे। हम बहनें कुछ प्रश्न पूछते थे तो दादी हमको प्रश्नों के ज्ञानयुक्त उत्तर देकर संतुष्ट करते थे, लेकिन इस पालना से मुझे विशेष नशा और खुशी अनुभव होता था और मुझे लगता था कि बाबा ने मुझे बड़ों की छत्रछाया अनुभव करने का विशेष भाग्य दिया है। जो भी समय सेवा में आती थी, वो सहज ही पार हो जाते थे। कई बार उस समय हॉस्पिटल नहीं होने के कारण मरीजों को पालनपुर या आवश्यकता होने पर अहमदाबाद गाड़ी से ले जाना पड़ता था। मैं उस समय इतनी अनुभवी नहीं थी, फिर भी दादीजी ने कई बार मुझे निमित्त बनाकर पालनपुर एवं अहमदाबाद भेजा। दादीजी मुझपर इतना विश्वास करते हैं, ये मेरे आत्मविश्वास और हिम्मत को बढ़ा देता था और मेरे लिए मुश्किल होने पर भी मैं सहज कर लेती थी। एक बार मोहिनी दीदी को बुखार होने पर दादीजी ने उन्हें अहमदाबाद ले जाने की ज़िम्मेवारी मुझे सौंपी। दादी का विश्वास व उनके सरल व सहज व्यवहार ने मुझे आगे बढ़ाया। वे हर मरीज की जैसे डॉक्टर थीं। वे हरेक के स्वास्थ्य व उन्नति का ख्याल रखती थीं।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान – मैं विजयी रत्न हूँ।

हम ही विजयी थे, हम ही विजयी हैं और हर कल्प हम ही विजयी बनते रहेंगे...।

योगाभ्यास – अ. बापदादा वतन में विजय का तिलक देते हुए मुझे वरदान दे रहे हैं, विजयी भव...विजयी भव मेरे बच्चे।

ब. बाबा, प्रकृति, भक्तात्माएं व समय विजयमाला लिये मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

स. बापदादा मेरे सामने हैं और उनके वरद् हस्तों से विजयमाला निकलकर मेरे गले में पड़ती जा रही है... बाबा मुस्कराते हुए कह रहे हैं, बच्चे, तत्तत्वम...तत्तत्वम... तत्तत्वम...।

धारणा – मांगने के संस्कार का परिवर्तन।

शिव भगवानुवाच – तुम दाता के बच्चे हो। तुम्हें किसी के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं है। तुम अपने श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर विराजमान रहो, तो सारे संसार के सुख-सुविधा के साधन और सम्पदा स्वतः तुम्हारे चरणों में आ जायेंगे।

चिन्तन – व्यर्थ संकल्पों से क्या हानि है? व्यर्थ संकल्प चलने के क्या-क्या कारण हैं? संकल्प को व्यर्थ जाने से कैसे बचायें? व्यर्थ संकल्पों को किस-किस तरह समर्थ संकल्पों में बदलें?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति – प्रिय आत्मन्! संसार की चाहे कितनी भी बड़ी-बड़ी सम्पन्न आत्माएं हों, लेकिन आपके आगे वे सम्पन्न आत्माएं भी कुछ नहीं हैं, क्योंकि वे अविनाशी सुख-शान्ति के खज़ाने से खाली हैं और आप सदा अविनाशी खज़ानों से भरपूर हैं। आप कितने भाग्यशाली हैं जो स्वयं भाग्यविधाता भगवान ने भाग्य लिखने की कलम आपके हाथ में दे दी है। आप अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ और श्रेष्ठ कर्म से जितनी चाहे उतनी लंबी अपने भाग्य की लकीर खींच सकते हैं।

स्वमान – मैं आत्मा सारथी हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है -सदा अपने को `सारथी और साक्षी' समझ चलना। आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस देह रूपी रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वतः ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वतः ही हो जाते हैं। सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की।''

योगयुक्त होने की विधि – 1. जैसे देह को अधीन कर शिवबाबा प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं, देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान इस देह में स्थित होने का अनुभव करें...चलते-फिरते कर्म करते भी यह चेक करें कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ..बीच-बीच में ये चेक करें। सारा दिन यदि यूं ही बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लिए कमाई से गया। यह स्वतः नैचुरल संस्कार बनाओ। कौन-सा? चेकिंग का।

2. सारथी स्वतः ही साक्षी होकर कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे...साक्षी बन देखने, सुनने, करने सबमें सब-कुछ करते भी निर्लेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे।

स्व-चेकिंग – `सारथी' किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकते। माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मेन्द्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तियाँ - `मन-बुद्धि-संस्कार' के परवश बना देती है। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए सारथी पन का भान विस्मृत न हो...।

रायगडा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए आचार्य राजेन्द्र जी,पतंजलि योग गुरु,हरिद्वार। साथ हैं जगन्नाथ मोहन्ती,कलेक्टर एंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बेहेरा,जिला अध्यक्ष,पतंजलि योग समिति व ब्र.कु. श्रीमती।

इलाहाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. सुषमा, स्वामी विद्यानंद,सच्चा आश्रम, डॉ. ए.वी. वान्डे,डायरेक्टर,कॉल्वेन हॉस्पिटल, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. मनोरमा व डॉ. अन्जू गुप्ता,रोट्री प्रेसीडेंट।

बरनाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल शर्मा,मैनेजर,श्री शांति सिरप, डॉ. त्रिलोकी जी, प्रो. प्रेम शर्मा, चरणजीत मित्तल,प्रिन्सीपल,सेन्ट्रल हाई स्कूल,एयरफोर्स, ब्र.कु. डॉ. प्रो. सीमा, ब्र.कु. ब्रिज बहन व अन्य।

वीरगंज-नेपाल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'स्वस्थ एवं सुखी समाज हेतु राजयोग का महत्व' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भारतीय महावाणिज्य राजदूत अन्जू जी, ब्र.कु. रविणा, ब्र.कु. बेली, रेडक्रॉस की पूर्व अध्यक्षा मधु राणा व समाजसेवी उषा शाह।

उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. उषा दीदी, ब्र.कु. निरुपमा व म.प्र. के शिक्षामंत्री पारस जैन।

आगरा-कमला नगर। आगरा कॉलेज के ग्राउण्ड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेन्स में उपस्थित हैं सर्वधर्म के प्रतिनिधि तथा अन्य समाजसेवी संगठन के प्रतिनिधियों के साथ ब्र.कु. शशि।

विश्व मानचित्र पर मानवता का खींचा नया चित्र

भारत, जहां से परमात्म प्रकाश प्रस्फुटित होता है, जिस प्रकाश की आभा से सभी आल्हादित हो जाते हैं, उस परमात्म प्रकाश की एक किरण, मणि के रूप में विश्व मानचित्र पर अपना चित्र छोड़ गयी, जिसकी छाप पांचो महाद्वीपों में उनके चरित्र के गुणगान के रूप में चित्रित है। जिनके आधार से यह प्रकाश चहुं ओर फैला है, ऐसे भारत की भारती मां, हमारी दादी मां को पूरा विश्व नमन करता है। धन्य हैं आप... आपकी यशगान और कीर्ति दिग-दिगान्तर तक अमर रहेगी.....

पाँचो द्वीपों में पहुँचाया परमात्म प्रकाश प्रकाशमणि ने

अध्यात्म प्रज्ञा राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि एक ऐसी विदूषी सशक्त नारी का नाम है जिन्होंने सिद्ध किया कि नारी शक्ति-स्वरूपा है। नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और संतुष्टता की मणि सन्तोषी देवी बन सकती है, यह अपने जीवन में उन्होंने कर दिखाया। उन्होंने अपने नेतृत्व में भारत और विश्व के लगभग 145 देशों के लाखों भाई-बहनों के जीवन में अद्भुत परिवर्तन लाकर विश्व सेवा के लिए प्रेरित किया। अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेम, शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना,आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य, करूणा जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और आत्मविश्वास से सुसज्जित किया।

द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में शिरकत की

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हज़ारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर दादी के हाथों में।

1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान से पूर्व दादीजी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादीजी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्व-शक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने उनके सान्धिय में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् की परामर्शक सदस्यता प्रदान की

दादी जी के नेतृत्व में समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा। ``दादी जी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय `शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए `शान्ति दूत सम्मान' से भी नवाज़ा, 5 राष्ट्रीय स्तर के भी पुरस्कार प्रदान किये। इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, समाजिक संस्थानों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान चिन्ह भेंट कर उनकी सेवाओं की स्तुति की ''।

'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से नवाज़ा।

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर, 1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ एम.चन्ना रेड्डी ने `डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया।

सोलह विभिन्न वर्गों का गठन

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सलाह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद्, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक, प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बंधुत्व का बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। युवाओं व महिलाओं के उत्थान, सर्वांगीण ग्राम विकास के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने वाले असंख्य कार्यक्रमों का संयोजन किया जाता है।

'विश्व धर्म संसद'की मनोनीत अध्यक्षा

शिकागो में `विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

दादी प्रकाशमणि को पीस मेडल देकर सम्मानित करते हुए तत्कालिन यू.एन. सेक्रेट्री जेनरल डॉ. परवेज़ डेक्यूलर।

विशेष आवॉर्ड से सम्मानित

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष अवॉर्ड से सम्मानित किया। मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत्-शत् नमन।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 4th Aug 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।